१०. गुरुदेव का घर

– *निर्मल वर्मा*

प्रिय जयशंकर जी,

आपके दो पत्र मिले । मैं शीघ्र उत्तर न दे सका । पिछले दिनों मैं कोलकाता गया था । भारतीय भाषा परिषद के निमंत्रण पर । वहाँ कुछ बहुत पुराने मित्रों से मुलाकात हुई । लोगों के अतिथि सत्कार और स्नेह-सद्‌भावना से बहुत अधिक अभिभूत हुआ । इस बार काफी लंबी अवधि बाद कोलकाता जाना हुआ... मैं बहुत उत्सुकता से अपने इस प्रिय शहर को पुनः देखने की प्रतीक्षा कर रहा था ।

कोलकाता से अधिक स्मरणीय और किंचित उदास स्मृति शांतिनिकेतन की है, जहाँ पहली बार जाने का मौका मिला । रवींद्रनाथ का घर... या बहुत से घर, जहाँ वह समय-समय पर रहते थे, देखते हुए लगता रहा, जैसे उनकी आत्मा अभी तक वहाँ कहीं आस-पास भटक रही हो । मैंने बहुत से दिवगंत लेखकों के गृह स्थान यूरोप में देखे थे, लेकिन शांतिनिकेतन का अनुभव कुछ अनूठा था....जैसे किसी की अनुपस्थिति वहाँ हर पेड़, घड़ी, पत्थर पर बिछी हो । मैंने वे सब पेड़ हाथों से छुए जिन्हें गुरुदेव रवि बाबू ने खुद रोपा था और जिनके नामों का उल्लेख कितनी बार उनके गीतों में सुना था । एक दिन हम शांतिनिकेतन से कुछ दूर उस ग्राम्य प्रदेश को देखने भी गए, जहाँ पावा नदी बहती है... संथालों की रम्य झोंपड़ियाँ, शाल के खेत और पेड़ों से घिरे पोखर-सबको देखकर अनायास शरत बाबू के बहुत पुराने उपन्यासों का परिवेश याद हो आया, जिन्हें कभी बचपन में पढ़ा था । पश्चिमी बंगाल का प्राकृतिक सौंदर्य भारत के अन्य प्रदेशों से बहुत अलग है । कहते हैं, मानसून के दिनों में वह और भी अधिक रमणीय हो जाता है । इच्छा होती है, वहाँ एक-दो महीने एक साथ रहा जाए, तभी मन की भूख मिट सकती है ।

वैसे इन दिनों दिल्ली पर भी वसंत की अंतिम गुहार गूँजती सुनाई देती है... दिन भर एक अजीब-सी पगला देने वाली बयार चलती है... दुख यही है कि यह नशीला मौसम ज्यादा दिन नहीं टिकता-गरमी एक बिल्ली की तरह उसे अपने पंजों में दबोचने के लिए छिपी रहती है-कब तक उसकी खूँखार आँखों से अपने को बचा पाएगा ।

× × × × × ×

आज ही आपका दूसरा कार्ड मिला । यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपको 'साहित्य सम्मेलन' में मेरा दिया वक्तव्य ठीक लगा । उसे मैंने धीरे-धीरे बीमारी के दौरान लिखा था, इसलिए उसके बारे में ज्यादा आश्वस्त नहीं था । पिछले तीन-चार वर्षों से हर बार मैं अध्यक्षीय भाषण

परिचय

जन्म : १९२९, शिमला (हिमाचल प्रदेश)

मृत्यु : २००५

परिचय : निर्मल वर्मा जी आधुनिक समय के प्रतिष्ठित लेखक एवं अनुवादक थे । पारंपरिक कहानी को आधुनिकता से जोड़ने का श्रेय आपको जाता है । आपकी कथाओं में भारतीय और पाश्चात्य दोनों परिवेश देखने को मिलते हैं । आपको ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था ।

प्रमुख कृतियाँ : 'परिंदे', 'जलती झड़ी', 'पिछली गर्मियों में', 'कौवे और काला पानी', 'सूखा' (कहानी संग्रह), 'एक दिन, एक चिथड़ा सुख', 'लाल टीन की छत', 'रात का रिपोर्टर', 'अंतिम अरण्य' (उपन्यास) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत पत्र प्रसिद्ध लेखक निर्मल वर्मा जी ने अपने प्रिय मित्र जयशंकर जी को लिखा है । प्रथम पत्र में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के मकान, शांतिनिकेतन, पश्चिमी बंगाल के प्राकृतिक सौंदर्य तथा दिल्ली के वसंत की चर्चा की गई है । अगले पत्र में दूसरे पर निर्भर न रहकर, अपने-आप काम करने, अध्ययन एवं लेखन को संबल बनाने की प्रेरणा दी गई है ।

देना टालता रहा था । एक बार तो उस संक्षिप्त सम्मेलन व अधिवेशन का गोवा में आयोजन किया गया था, जहाँ मेरे जाने की उत्कट इच्छा थी पर किन्हीं अनिवार्य कारणों से जाना नहीं हो सका । आपको और कुछ अन्य मित्रों को हिंदी भाषा और साहित्य के बारे में मेरे विचार अच्छे लगे, यह जानकर सचमुच बहुत प्रसन्नता हुई ।

आपके पिछले एक पत्र में उदासी और अकेलेपन का दबा-सा स्वर था, जिसने मुझे काफी परेशान किया । मैं सोचता हूँ, आपको अब बहुत कुछ अपने जीवन का, दूसरे पर निर्भर न रहकर, स्वयं अपने काम, अध्ययन और लेखन का संबल बनाना होगा । भोपाल के मित्र अपने कामों में व्यस्त रहते हैं और यद्‌यपि सब आपसे बहुत स्नेह करते हैं, आपको उनसे नियमित पत्र व्यवहार की आशा नहीं करनी चाहिए । जब कभी मन ऊबे तो छह-आठ महीने में कभी दिल्ली, कभी भोपाल कुछ दिन के लिए चले जाना चाहिए । इससे आपको परिवर्तन का थोड़ा-बहुत आनंद तो मिलेगा ही, यात्रा करने का सुख भी मिलेगा । सौभाग्य से आप अपनी रुचियों में काफी हद तक स्वावलंबी हैं-संगीत, पुस्तकों और कलाओं में आपकी दिलचस्पी बहुत हद तक आपके अनुभवों को एक नये क्षितिज की ओर ले जाती है, जहाँ अपना अकेलापन धुंध की तरह छितर जाता है । यह अपने में बड़ी ब्लेसिंग है, जो हर किसी व्यक्ति के लिए उपलब्ध नहीं है । आपने अपने जीवन को आमला और नागपुर में बाँटकर बहुत अक्लमंदी और दूरदर्शिता का परिचय दिया है – आप जब चाहें अकेले भी रह सकते हैं और जरूरत पड़ने पर परिवार और मित्रों के सान्निध्य का सुख भी उठा सकते हैं । मैं समझता हूँ, यह एक अच्छा उपाय है, जब तक कि उससे कोई बेहतर विकल्प नहीं ढूँढ़ लेते ।

मुझे खुशी है कि आप इन दिनों फ्लॉबेर के पत्र पढ़ रहे हैं । रिल्के के पत्रों की तरह वे मुझे बहुत ही प्रेरणादायक लगे थे-कैसे एक व्यक्ति अपने समूचे जीवन को अपने लेखक के प्रति समर्पित कर देता है । वह सचमुच, सही अर्थों में, एक साधक थे । उनका जीवन ही उनका लेखन और लेखन उनका जीवन था ।

मैं आजकल अलका सरावगी का नया उपन्यास 'कोई बात नहीं' पढ़ रहा हूँ । मुझे यह बहुत अच्छा लग रहा है । आशा है, कभी आप उसे पढ़ पाएँगे । जब विजय शंकर नागपुर जाएँगे, उनके हाथ मैं उस उपन्यास को आपको भिजवा दूँगा ।

आपकी माँ अब कैसी हैं ? नागपुर में आप कब तक रहेंगे ?

सस्नेह

आपका निर्मल

—— ० ——

लेखनीय

'मोबाइल के अति उपयोग से होने वाले दुष्परिणाम' विषय पर अपने विचार लिखिए ।

संभाषणीय

'नदियाँ दिन-ब-दिन प्रदूषित होती जा रही हैं; इसपर चर्चा करके उन्हें स्वच्छ करने के उपाय बताइए ।

पठनीय

शांतिनिकेतन के बारे में जानकारी इकट्‌ठी करके पढ़िए ।

श्रवणीय

ऑनलाईन ऑडियो पुस्तकें सुनिए तथा चर्चा कीजिए ।

शब्द संसार

अनूठा वि.(हिं.) = अद्‌भुत
शाल पुं.(सं.) = एक प्रकार का वृक्ष
गुहार स्त्री.सं.(हिं) = दुहाई
संबल पुं. सं.(हिं.) = सहायक वस्तु, सहारा
दिलचस्पी स्त्री.सं.(फा.) = रुचि
छितर वि.(हिं.) = तितर-बितर

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) लिखिए :

१. लेखक का कोलकाता जाने के कारण
   १. ______________
   २. ______________

२. शांतिनिकेतन का अनुभव अनूठा लगने के कारण
   १. ______________
   २. ______________

(२) कृति कीजिए :

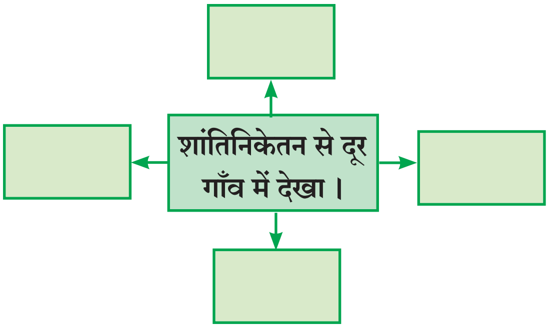

(३) उत्तर लिखिए :

१. निर्मल जी इनके पत्र पढ़ रहे हैं ______________
२. लेखक यह उपन्यास पढ़ रहे हैं ______________

(४) कारण लिखिए :

१. निर्मल जी एक पत्र पढ़कर बहुत बेचैन हुए क्योंकि ______________
२. लेखक यह जानकर प्रसन्न हुए क्योंकि ______________

(५) शब्दों के भिन्न अर्थ लिखिए :

१. शाल < ____ / ____
२. अर्क < ____ / ____
३. वर्ण < ____ / ____

अभिव्यक्ति 'पत्र अपने विचार-भावनाओं को शब्दों द्‌वारा दूसरों तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है', स्पष्ट कीजिए।

उपयोजित लेखन 'वर्तमान समय में शांति के क्षेत्र में/पर्यावरण संरक्षण में भारत की भूमिका का महत्त्व' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लेखन कीजिए।

78BIY5

भाषा बिंदु

समास पढ़िए, समझिए और अन्य उदाहरण लिखिए :-

समास

उत्तर पद प्रधान (विशेष्य) और पूर्व पद गौण (विशेषण) → तत्पुरुष

समस्त पद	विग्रह
१. चिड़ियाघर (चिड़िया – पूर्व पद गौण; घर – उत्तर पद प्रधान)	चिड़िया का घर
२. ________	________
३. ________	________
४. ________	________

समस्त पद के पूर्वपद में संख्यावाचक विशेषण → द्विगु समास

समस्त पद	विग्रह
१. त्रिदल (संख्यावाचक विशेषण)	तीन दलों का समाहार
२. ________	________
३. ________	________
४. ________	________

पहला पद अव्यय हो और वही प्रधान हो → अव्ययीभाव

समस्त पद	विग्रह
१. भरपेट (अव्यय पद प्रधान)	पेट भर के
२. ________	________
३. ________	________
४. ________	________

पहला पद और दूसरा पद मिलकर तीसरे पद की ओर संकेत → बहुव्रीहि

समस्त पद	विग्रह
१. पीतांबर (पीत – पहला पद; अंबर – दूसरा पद)	पीत है अंबर जिसका
२. ________	________
३. ________	________
४. ________	________

इसके सामासिक शब्दों में पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है अथवा एक पद समान और दूसरा पद उपमेय होता है । → कर्मधारय

समस्त पद	विग्रह
१. महात्मा (महा – समान पद; त्मा – उपमेय)	महान है जो आत्मा (महान – विशेषण; आत्मा – विशेष्य)
२. ________	________
३. ________	________
४. ________	________

समस्त पद में दोनों पद समान → द्वंद्व समास

समस्त पद	विग्रह
१. घर-द्वार (घर – समान पद; द्वार – समान पद)	घर और द्वार
२. ________	________
३. ________	________
४. ________	________